महिलाओं को सम्मान दे

मान मिले सम्मान मिले,
नारी को उच्च स्थान मिले।
जितनी सेवा भक्ति वो करती।
उस से ज्यादा सम्मान मिले।
यही भावना हम भाते,
की उसको यथा स्थान मिले।।

कितना कुछ वो,
दिनरात करती है।
घर बाहर का भी
देखा करती है।
रिश्तेदारी आदि निभाती।
और फिर भी वो थकती नहीं।।

किये बिना आराम वो,
काम निरंतर करती है।
न कोई छुट्टी न ही वेतन,
कभी नहीं वो लेती है।
फिर भी निस्वार्थ भाव से,
ख्याल सब का रखती है।
ऐसी होती है महिलाएं,
जो प्यार सभी करती है।।

करती है जो कार्य वो,
कोई दूजा न कर सकता।
सब की सुनती,
सबको सहती।
फिर भी विचलित,
वो होती नहीं।
लगी रहती दिन भर वो,
अपने घर के कामो में।।

आओ सब संकल्प ले।
जन्म दिन के अवसर पर।
सदा ही देंगे उनको,
हम सब सम्मान अब।
क्योंकि वो है हम,
सबकी जो जननी है।
सहनशीलता की इस देवी को,
कुछ तो आज उपहार दे।
अपने मीठे वचनो
और मुस्कान से।
क्यों न हम
उसका सम्मान करे।।

– संजय जैन, 'बीना' मुम्बई

महिलाओं का समाज निर्माण की जिम्मेदारी निभाना ही होगी ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस दुनिया भर में महिलाओं को सम्मान, सम्मान का अधिकार को उनके राजनीतिक आर्थिक सामाजिक सरोकार पर बल देने के लिए मनाया जाता है भारत में आजादी के **'अमृत महोत्सव'** में इस दिवस का अपना एक अलग महत्व है । हमारी प्राचीन परम्परा नारी के सम्मान पर हमेशा से बल देती रही हैं वैदिक काल में भी स्त्री सम्मान की स्थिति यह थी कि बिना उनकी उपस्थिति में कोई कार्य पूरा नहीं होता था अथर्ववेद का एक श्लोक है यत्र नार्यस्तु पूच्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, यत्रैतास्तु न पूच्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया अर्थात जहां नारी की पूजा होती है उसे सम्मान दिया जाता है वहां देवता विचरण करते हैं और जहां उसके प्रति अनादर का भाव होता है वहां किसी भी तरह के या सभी तरह के कर्म निष्फल होते हैं नारी सम्मान की यह श्रृंखला चंदनबाला, सती अंजना, मैना सुंदरी, सीता देवी, पार्वती, गंगा, कुंती, शकुंतला आदि के रूप में हर समय हर काल में विद्यमान रही है पर अफसोस की बात है कि स्त्री के इस सम्मान को धीरे–धीरे बुलाने की कोशिश की गई ।

वर्तमान परिस्थितियों में अब जब महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार मिल रहा है तो राष्ट्र व समाज संगठन में भी महिलाओं को आगे बढ़कर अपनी सहभागिता निभाने का अवसर अवश्य ही

मिलना चाहिए । पहले समाजिक संगठनों में पुरुष का एकाधिकार होता था जिसके कारण सामाजिक नीतियां एक तरफा ही बनती रही, महिलाओं की भागीदारी से समाज में नियमों को बहुत कुछ परिवर्तन आया है ।

आज की परिस्थितियों में जब कई महिलाएं घर, व्यापार व नौकरी के साथ साथ परिवार का पूर्ण रूप से ख्याल रख रही हैं तो क्या वे समाज को सुदृढ़ बनाने में सक्षम नहीं है ? आवश्यक है कि स्थानीय व राष्ट्रीय सामाजिक संगठन महिलाओं को अपने संगठन में उचित स्थान व सम्मान दें । वे अपनी योग्यता और कार्यकुशलता से सशक्त समाज के निर्माण में बहुत ही सहायक होगी। हमें पूर्व की भांति महिलाओं का अलग संगठन बनाकर उन्हें सामाजिक जबाबदारी से दूर करने की मानसिकता को छोड़ना होगा आज पुरुष वर्ग को यह मानना होगा कि महिलाओं को बराबरी मे रख कर ही समाज संगठन को सुदृढ़ बनाया जा सकता है ।

महिला सशक्तिकरण की बात सिर्फ नारों और वादों में न रखते हुए इन बातों को हमें जमीनी स्तर पर उठाना होगा, आज की आवश्यकता है की महिलाएं समाज संगठन में अपनी अहम भूमिका निभाए । संगठित समाज के लिए महिलाओं का महत्वपूर्ण पदों पर होना आवश्यक है । जिस तरह से वे अपने घर परिवार का ध्यान रखती है उसी तरह वह अपने समाज व राष्ट्र के संगठन का भी ध्यान रखने में सक्षम है । बस हमें उन्हें सहर्ष ही समाज संगठन मे उचित व सम्मान जनक स्थान देना होगा । जैन समाज के संदर्भ में हम यदि देखें तो यहां पर हमारे यहां महिलाओं की साक्षरता का प्रतिशत शत प्रतिशत है । जिसके कारण आज हमारे समाज में बच्चों की साक्षरता व उच्च शिक्षा का प्रतिशत काफी ज्यादा है, माताओं की अच्छी शिक्षा के कारण बच्चों में अच्छे संस्कार होते हैं जो अच्छे समाज और राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक होते हैं ।

अब महिलाओं को घर परिवार को साथ रखते हुए सामाजिक दायित्वों में भी अपनी भागीदारी निभाने के लिए आगे आना होगा । अपने रहवासी क्षेत्र में समाज की महिलाओं का संगठन बनाकर समाज के उत्थान के लिए चर्चा कर योजना बनाना चाहिए । यहां पर इस विषय को छोड़ देना चाहिए कि कि संगठन में गृहिणी या कामकाजी महिलाऐं, सभी को अपनी अनुकूलता अनुरुप समय देकर समाज विकास में सहयोग करना चाहिए ।

– अनुपमा जैन, सहसंपादिका

संगठन ही समाज को सुदृढ़ बनाते है

आज के इस दौर में जहां परिवार बिखर रहे हैं एकल परिवार के बच्चे नौकरी या व्यवसाय के लिए अन्य शहरों में जा रहे हैं। वहां सबसे बड़ी आवश्यकता है समाज के सशक्त संगठन की । संगठन समाज की विचारधारा को प्रदर्शित करने का मंच हैं जो समाज जमीनी स्तर पर संगठित होते हैं वह निश्चित ही अपने सामाजिक ताने–बाने को क्रियाशील व समृद्ध रूप से बनाए रखते हैं इसकी अनेक मिसालें हमारे सामने हैं खंडेलवाल समाज, परवार समाज, हुमड़ समाज, अग्रवाल व माहेश्वरी समाजों ने अपने संगठनों के बल पर ही अनेक शहरों में वह काम करा है जो अनुकरणीय और प्रशंसनीय हैं।

गोलालारीय समाज का राष्ट्रीय संगठन 22 वर्षों के पश्चात भी आज उसी जगह पर है, जहां से कभी उसने शुरुआत की थी बल्कि सही मयानों में तो यह उससे भी कई वर्ष पीछे जा चुका हैं।

गोलालारीय समाज के प्रतिष्ठित व समाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेने वाल क्रियाशील महानुभाव के प्रयासों से वर्ष 2000 में जबलपुर में राष्ट्रीय संगठन बनाने के विचार को वर्ष 2003 में भोपाल अधिवेशन में अस्थाई कमेटी के आधार पर **राष्ट्रीय गोलालारीय परिषद** का गठन किया गया था, जिसमें मनोनीत प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंपालाल नौहरकंला वालों के नेतृत्व में समाज हितार्थ कई योजनाएं बनाई गई थी, समाज के कमजोर वर्ग की आर्थिक उन्नति के साथ शिक्षा व स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शन व मदद करना, विवाह योग्य युवक युवतियों के लिए डाटा बैंक का निर्माण करना, समाज का मुखपत्र प्रकाशित करना व जिन नगरों में गोलालारीय परिवार अधिक है वहां पर स्थानीय गोलालारीय समाज का गठन करना और जहां गोलालारीय समाज का संगठन है उसे और अधिक सुदृढ़ करने के विचार के साथ आगे बढ़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, साथ ही आगामी छ: माह में गोलालारीय परिषद के चुनाव करा कर स्थाई समिति का गठन करने का निर्णय भी लिया गया था। सामाजिक संगठनों में महासचिव का योगदान विशेष उल्लेखनीय व महत्वपूर्ण होता हैं संगठन की समस्त गतिविधियां महासचिव के द्वारा ही संपादित की जाती हैं यह महत्वपूर्ण पद संस्था की धूरी होता है । महामंत्री के निर्णयों के आधार पर ही संगइन अपने क्रियाकलापों की गति और दिशा तय कर पाते है । इस महत्वपूर्ण पद पर सुशोभित पदाधिकारी की निष्क्रियता या महत्वकांक्षा के कारण संगठन अपने किसी भी लक्ष्य की और एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सका वर्ष 2009 में इंदौर गोलालारीय समाज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में 2003 के भोपाल अधिवेशन के विषयों पर पुनः चर्चा कर शीघ्र निर्णय लेने पर जोर दिया गया। जिसे उपस्थित सभी सदस्यों में गोलालारीय परिषद के विधिवत चुनाव करवाने पर सहमति बनी । वर्ष 2010 में भोपाल राष्ट्रीय अधिवेशन में लिए गए सामूहिक निर्णय अनुसार संगठन के चुनाव के लिए चुनाव अधिकारी की नियुक्ति व चुनाव में सहभागिता निभाने वाले सदस्यों के लिए नियमावली बनाई गई, कई शहरों के गोलालारीय सदस्यों द्वारा चुनाव में सहभागिता के लिए निर्धारित सदस्यता शुल्क भी जमा करवाया गया परन्तु आज 12 वर्षों के पश्चात भी महासचिव महोदय की और से चुनाव कैसे संपादित होगे आज तक सूचित नहीं करा गया ।

सशक्त राष्ट्रीय संगठन के अभाव में हम कई वर्ष पीछे चले गए हैं 20 वर्ष पूर्व यदि हमारे राष्ट्रीय संगठन को क्रियाशील बना दिया होता तो अनेक नगरों में हमारे स्थानीय संगठन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए समाज की आर्थिक व समाजिक उन्नति के लिए कार्यरत होते, राष्ट्रीय संगठन की सशक्त कार्यकारिणी स्थानीय समाज में होने वाले बिखराव और मतभेदों को पूर्ण अधिकार के साथ रोकने में सक्षम होती। राष्ट्रीय संगठन के अभाव में छोटे छोटे नगरों में हम उन परिवारों के लिए कोई योजना नहीं बना सके जिनकी उनको आवश्यकता थी शिक्षा, विवाह व व्यवसाय संबंधी आवश्यक जानकारी ऐसी कोई भी योजना हमारे द्वारा नहीं बनने से हमारे बच्चे जानकारी के अभाव में अन्य दूसरे संगठनों पर आश्रित होते रहे यह हमारे लिए शर्म का विषय होना चाहिए।

इन्दौर गोलालारीय समाज द्वारा प्रकाशित समाज का एक मात्रमुख पत्र **'गोलालारीय दर्शन'** गत 12 वर्षों से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को सफलता पूर्वक निभा रहा है परंतु हम उस दिन और अधिक सफल होंगे जब गोलालारीय समाज प्रत्येक नगर की प्रत्येक कार्यकारिणी अपने संगठन को महत्व देते हुए राष्ट्रीय संगठन को सशक्त बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं और राष्ट्रीय संगठन अपने जवाबदारियों का पूर्ण रूप से निर्वाह करते हुए प्रत्येक शहर के स्थानीय संगठन का सम्मान करते हुए, समाज के प्रत्येक वर्ग की सहायता के लिए तत्पर हो।

समाज संगठन से जुडा हर सदस्य को यह प्रण अवश्य ही लेना चाहिए कि निजी स्वार्थों को दूर रखते हुए संगठन के हितों को सर्वोपरि मानते हुए समाज में हो रहे बिखराव को रोकने का हर संभव प्रयास करेंगे और लोगों के मन में अपने समाज के प्रति आदर भाव व विश्वास बानाएं रखना ही हमारा ध्येय होना चाहिए ताकि हम गर्व से कह सके कि हाँ हम गोलालारीय हैं।

– राजेन्द्र जैन 'बागो', संपादक

नहीं जागी समाज तो टूट जाएगा ताना–बाना

अनिल जैन, बड़कुल, गुना । लगता है आजकल हर व्यक्ति अपने में मस्त है । अधिकांश परिवारों को होश ही नही कि वह किस दिशा में जा रहे हैं आने वाला समय उन पर कितना भारी पड़ने वाला है। जैन समाज में देर से विवाह करने की परम्परा ने पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया है। जब तक लोग समझ पाते हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। शासन एवं सामाजिक व्यवस्था अनुसार लड़कों के लिए 21 एवं लड़कियों के लिए 18 वर्ष की आयु होने पर शारीरिक, मानसिक एवम पारिवारिक स्थितियों के अनुसार सही उम्र में विवाह की व्यवस्था की गई है। लेकिन वर्तमान समय मे अधिकांश परिवारों ने देखा–देखी, लड़कियों को पढ़ाई की होड़ ने, बढ़ती उम्र की चिंता छोड़कर, जॉब कर ऊँचे पैकेज की प्यास ने सब कुछ अस्त–व्यस्त कर दिया है। बड़ी उम्र तक पढ़ाई फिर कुछ वर्षों तक जॉब, फिर योग्य वर की तलाश... तब तक लगभग आधी जिंदगी निकल जाती है। फिर दोनों के जॉब के कारण देर से संतान, और संतान होने पर उसके पालन की समस्या। परिपक्व उम्र, ऊंचे वेतन के कारण विवाह न होकर एक पार्टनरशिप जैसे रिश्ते हो रहे हैं समझौते में जरा से खलल पड़ते ही इनमें से बड़ी संख्या में रिश्ते टूट रहे हैं । विवाद, परित्यक्त एवं विवाह विच्छेद बढ़ रहे हैं। कुछ लड़कियां विवाह पूर्व सम्बन्ध बना रही हैं तो कई अंतरजातीय विवाह कर रही हैं। बड़े बड़े स्वप्न धराशाही हो रहे हैं माता–पिता सर पर हाथ रखे समझ नही पा रहे हैं ये हो क्या रहा है। जन्म दर 1.2 होने से लगातार आधी आबादी कम होकर कुछ वर्षों में कही जैन समाज विलुप्त ही न हो जाये। दूसरी ओर लड़कों की स्थिति बड़ी विचित्र हो गई है। व्यापारी परिवार से लड़की ब्याहने में लोगों को कम रुचि है। स्वच्छन्द जिंदगी जीने की ललक के कारण लड़कियों ने महानगर, विदेश में रहना स्वीकार लिया है। उनको केवल जॉब वाला लड़का ही चाहिए। परिणाम स्वरूप मध्यम वर्गीय व्यापारी परिवार के लड़कों के अविवाहित रहने की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। सामाजिक व्यवस्था चरमरा रही है। छोटे नगरों और गाँव की स्थिति तो अत्यन्त चिंताजनक है। जब देश भर में, अल्पसंख्यक सेमिनार या युवाओं के बीच मोटिवेशनल स्पीच के लिए जाता हूँ तो बड़ी विकट परिस्थितियों को देखता हूँ जिनका समाधान अति कठिन होता है। आज समाज को बल्कि हर व्यक्ति को इस बारे में चिंतन करने की जरूरत है। अंधी दौड़ से थकने के पूर्व सही समय पर अच्छे–सार्थक निर्णय लेने की आवश्यकता है। लोगों को न देखकर अपने परिवार को देखने की जरूरत है वर्ना सब कुछ बर्बाद हो सकता है।